S. Mazumdar

Dualism :- Determinism vs Possibilism

मनुष्य और वातावरण ये दोनों ही प्रकृति का अभेद्य अंग है, इन दोनों में सदा द्वन्द छिड़ा रहता है, मनुष्य जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त वातावरण को अनुकूल बनाने की कोशिश में लगा रहता है, जीत कभी मनुष्य की तो कभी वातावरण की होती है, वातावरण का प्रत्येक अंग से मानव संबद्ध है, खाद्य से लेकर सुख समृद्धि तक सारी सामग्रियाँ प्रकृति की ही देन है, मानव अपनी बुद्धि और क्षमता से प्रकृति प्रदत्त आवश्यक वस्तुओं एवं वातावरण को अपनी रूचि अनुसार परिवर्तित कर लेता है।

Smith महोदय के शब्दों में "Man is not resident of the earth. He is a builder, a geomorphic agent and earth changer". अर्थात मनुष्य और वातावरण दोनों परिवर्तनशील है तो मनुष्य की चाह और शक्ति भी हमेशा बदलती रहती है, मनुष्य प्रकृति का दूत एवं निर्माता है, वह एक दक्ष कारीगर है जो प्रकृति प्रदत्त चीजों को अपने अनुसार ग्राह्य बनाता है,

मनुष्य एवं वातावरण के संबंध में दो विचार-धाराएँ थी, एक वर्ग के अनुसार प्रकृति सर्वोपरी है, मनुष्य वातावरण से नियंत्रित होता है, उसकी शारीरिक मानसिक, आर्थिक और साँस्कृतिक विकास सभी वातावरण से प्रभावित होता है, ऐसे विचारधारा को नियतीवाद (Determinism) कहा गया एवं इस विचारधारा के समर्थकों को नियतीवादी या (Determinist) कहा गया।

एक दूसरा वर्ग जो वातावरण को सर्वोपरी नहीं मानता और इनके अनुसार मनुष्य अपनी इच्छानुसार वातावरण को संशोधित और परिवर्तित कर अपने अनुकूल बना सकता है, इस विचारधारा को संभववाद (Possibilism) कहा गया एवं इसके समर्थकों को संभववादी (Possibilist) कहा गया।

हाल के दिनों में इन दोनों विचारधाराओं के बीच एक नई विचारधारा का अभ्युदय हुआ, जिसे नवनियतिवाद (Neo Determenism) कहा गया,

नियतीवाद या Determinism :→ नियतीवाद विचारधारा के समर्थक नियतीवादी प्रकृति को ही सर्वोपरी मानते हैं, इनके अनुसार मनुष्य प्रकृति का दास है। मनुष्य का प्रत्येक क्रियाकलाप वातावरण द्वारा नियंत्रित होती है, साथ ही मनुष्य का शारीरिक गठन, विचार, सांस्कृतिक विकास एवं आर्थिक विकास भी वातावरण द्वारा ही निर्धारित होते हैं, इस अनुसार मनुष्य वातावरण या प्रकृति के इच्छा विरुद्ध, कुछ नहीं कर सकता,

इस नियतीवादी विचारधारा के प्रमुख समर्थक थे → Bodin, Humbolt, Karl Ritter, Buckle and Mackld, Kumari Sempule, नियतीवादी सिर्फ प्रकृति के वर्चस्व को स्वीकार करते हैं, इनके अनुसार, उदाहरण के रूप में Asia के लोग आलसी और आरामतलबी होते हैं, जिसका एक मात्र कारण वहाँ की उष्णार्द्र जलवायु है। इसके विपरीत शीतोष्ण जलवायु के प्रभाव से पश्चिमी यूरोप के लोग चुस्त-दुरुस्त एवं कार्यकुशल होते हैं, इसी प्रकार भौतिक वातावरण के कारण ही पर्वतीय लोग मैदान निवासियों से ज्यादा हृष्ट पुष्ट होते हैं

एरिस्टोटल तथा Bodin जैसे विद्वानों ने मानव पर नियंत्रण मुख्यतः जलवायु के प्रभाव द्वारा माना है, 19 वीं शताब्दी के अंत में हम्बोल्ट तथा कार्ल रिटर जैसे भूगोलवेत्ताओं ने भी प्रकृति को ही प्रमुख माना, कार्ल रिटर का मानना था कि भौतिक वातावरण में ही मानव की कार्यकुशलता है, हम्बोल्ट ने भी नियतीवाद विचारधारा पर गहन अध्ययन किया तथा उनके विचारों के समर्थन कर्ता Buckle, Semolin, Replay इत्यादि रहें, Semolin के अनुसार, "Society is fashioned by environment" Mackle के अनुसार अपराध रीति रिवाज विवाह आदि मानवीय व्यवहार में भी प्रकृति का प्रभाव दिखाई देता है,

नियतीवादी विचार-धारा के प्रबल समर्थकों में से एक कुमारी सेम्पुल रही, उनके अनुसार "मनुष्य

मोम या प्लास्टिक के पुतले समान है जिसपर वातावरण का पूरा प्रभाव होता है और मनुष्य अपने को वातावरण के अनुसार ढाल लेता है, सम्पूर्ण के अनुसार वातावरण या प्रकृति का नियन्त्रण मनुष्य पर होता है। पर प्रकृति मनुष्य की तरह शोरगुल नहीं करती, वातावरण का प्रभाव मनुष्य पर चार रूपों में पड़ता है।

1) शारीरिक अंगो पर – जिस कारण शारीरिक गठन, रंग-रूप में भिन्नता होती है।

2) मानसिक रूप पर – जिस कारण धर्म, साहित्य, भाषा और विचारों में भिन्नता होती है।

3) आर्थिक एवं सामाजिक रूप में – जिस कारण समाज में निर्धनता या सम्पन्नता आधारित होती है।

4) मनुष्य के आवास प्रवास के रूप में – जिस कारण मनुष्य का आवास तथा समूह में रहने के अन्य साधनों में परिवर्तन होता है

उन्होंने कई उदाहरणों द्वारा अपने पक्ष को समझाने की कोशिश की जैसे – मनुष्य विषुवत रेखीय, मॉनसूनी या शीत क्षेत्रों में रसदार फलों की खेती क्यों नहीं होती? चावल की खेती दू० पू० एशिया में ही क्यों केन्द्रित है? कनाडा और साइबेरिया में गन्ने की खेती क्यों नहीं की जाती? उत्तर एकही है इनके लिए आवश्यक भौतिक परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं

प्रारंभ में इस नियतीवाद के प्रचुर प्रशंसक रहे तथा इस विचारधारा का काफी विकास हुआ लेकिन बीसवी सदी के वैज्ञानिक युग में नियतीवाद के समर्थक घट गए। अब ऐसे कई उदाहरण पाए जाने लगे जो प्रकृति के वर्चस्व को नकारती थी, इसकी के साथ उद्भव हुआ एक नए विचारधारा का जिसे संभववाद कहा गया।

संभववाद या Possibilism :→ इस विचारधारा के समर्थक प्रकृति को सर्वोपरी नहीं मानते इनके अनुसार प्रतिकूल वातावरण में भी मनुष्य अपनी

बुद्धि से उसे संशोधित कर अने अनुकूल बना सकता है, इस विचारधारा के समर्थक रहे वाइडल-डी-ला ब्लाश, जीन्सर, ब्रुन्स, Bowman, Febru इत्यादि, इस विचारधारा को सर्वप्रथम Febru ने संभववाद शब्द से पुकारा। उन्होंने वातावरण को अपार साधनयुक्त ना मानकर कहा कि मानव संभावनाएँ वहाँ उपस्थित साधनों में नीहित होती है, इन साधनों का उपयोग मानव अपने क्षमतानुसार कर सकता है, उदाहरणस्वरूप U.S.A के पूर्वी प्रदेश में आकर बसनेवाले मानव के सामने कई संभावनाएँ थी, लेकिन किसीने मत्स्य कर्म अपनाया, किसी ने खेती तो किसी ने आखेट को चुना, स्पष्ट है कि चयन मानव की इच्छा, अधिक प्रबल है न कि वातावरण।

Febre के अनुसार वातावरण के भौगोलिक तथा मानव वर्ग के सम्पर्क में परिवर्तनशील हो जाते हैं। संभववादी मानव समूह के स्वभाव पर भी बल देती है क्योंकि मनुष्य की आदतों के अनुसार ही उसकी संस्कृति विकसित है।

संभववाद भी मानव और प्राकृतिक वातावरण के संबंधों की व्याख्या में नियतिवाद के समान स्पष्ट और पूर्ण नहीं है। पूर्णतः प्राकृतिक शक्तियों की अवहेलना करके प्रकृति विजय की धारणा का पोषण ही इसकी कमजोरी है, संभववादियों के विचारों में भी एक निश्चित मत नहीं मिलता। कुछ समर्थक प्राकृतिक शक्तियों के महत्व को इंकार करते हैं वहीं कुछ संभववादी यह भी स्वीकार करते हैं कि मनुष्य पूर्णरूपेण वातावरण की अवहेलना नहीं कर सकता।

मनुष्य और वातावरण के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या के लिए कई विचारकों ने नियतीवाद एवं संभववाद के बीच एक मध्यम मार्ग का समर्थन किया। A.F. Martin ने इस समस्या का कारण और प्रभाव द्वारा समझाने का प्रयास किया, और इसी मध्यममार्ग से नवनिश्चयवाद का जन्म हुआ।

—x—